The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 10 | October 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

मिजोरम के जनजातीय समाज पर ईसाई धर्म का प्रभाव

डॉ० प्रदीप कुमार सिंह

प्रोफेसर, भूगोल विभाग, एम०एम०पी०जी० कालेज, कालाकांकर, प्रतापगढ़ (उ०प्र०), 229408

ई-मेल: dr.p.k.singh1967@gmail-com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.24491367

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 24-11-2026

Accepted: 07-11-2026

Published: 20-11-2026

Keywords:

मिजोरम का जनजातीय समाज, जनसंख्या, परम्परागत समाज, ईसाई धर्म

ABSTRACT

मिजोरम पूर्वोत्तर भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है। मिजोरम राज्य 21° 58" उत्तरी अक्षांश से 24° 35" उत्तरी अक्षांश एवं 92° 15" पूर्वी देशान्तर से 93° 29" पूर्वी देशान्तर के मध्य 21081 वर्ग कि०मी० में विस्तृत है। इस राज्य की कुल जनसंख्या 1097,206 है। मिजोरम को 20 फरवरी 1987 को राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। मिजोरम राज्य की 94.04 प्रतिशत जनसंख्या जनजातीय है। मिजोरम राज्य में 06 प्रकार की जनजातियां हैं। मिजोरम में 87.16 प्रतिशत लोग ईसाई धर्म को मानते हैं। मिजोरम के जनजातीय समाज की 90 प्रतिशत जनसंख्या ईसाई धर्म को मानती है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मिजोरम की जनजातियों पर ईसाई धर्म के प्रभाव, प्रभाव के कारणों एवं ईसाई धर्म के बढ़ते प्रभाव की व्याख्या की गयी है।

[1]

<u>प्रस्तावना:-</u> भारत का मानचित्र देखने से यह स्पष्ट होता है कि पूर्वी कोने पर जो एक पतली गर्दन सी बनी दिखती है, वही देश को (भारत वर्ष) उस भूभाग से जोड़ती है, जिसे पूर्वोत्तर भारत के नाम से जाना जाता है। यही पतली सी गर्दन, जो लगभग 43 कि.मी. चौड़ी है, यदि इसे दबा दी जाय तो पूर्वोत्तर के नाम से जाना जाने वाला यह सम्पूर्ण क्षेत्र भारत से अलग हो जायेगा। यह क्षेत्र सात राज्यों के रूप[2] में (सात बहनें असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम एवं अरुणांचल प्रदेश) जाना जाता है। यहाँ पर लगभग 200 आदिवासी जातियां हैं प्रत्येक का अपना नाम एवं अपनी भाषा है-ऐसी भाषा जो पड़ोस के ही आदिवासी न समझ सकें। अध्ययन क्षेत्र मिजोरम में छह (06) आदिवासी जातियां हैं, जिनका अलग-अलग भाषा समूह है। हमारा समाज अनेक संस्कृतियों एवं प्रजातियों का संगम स्थल रहा है। इसी समाज के कतिपय मानव समूह ने आज भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को आधुनिक समाज के सम्पर्क में

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

आने के पश्चात् भी विनष्ट होने नहीं दिया है। ऐसे समूहों को ही हम "जनजाति" "आदिम जाति", वन्य जाति" अथवा कबीलों के नाम से सम्बोधित करते हैं। वास्तव में जनजाति एक ऐसा अन्तर्विवाही क्षेत्रीय समूह है, जिसके सदस्य, सामान्य भूभाग, भाषा, संस्कृति, धर्म, जीवन स्तर तथा जीवन शैली के आधार पर समानता की भावना द्वारा संगठित रहते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उपर्युक्त संकल्पनात्मक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत मिजोरम के जनजातीय समाज में हो रहे परिवर्तन एवं इसाई धर्म के प्रभाव का उल्लेख किया गया है।

वर्तमान समय में मिजो जनजातियों का परम्परागत समाज मात्र इतिहास बन कर रह गया है। यहाँ ईसाई धर्म बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ा है। ब्रिटिश शासन के साथ ही मिजोरम में ईसाई धर्म का भी प्रवेश हुआ। मिजोरम ही नहीं वरन् सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत में ईसाई धर्म का विस्तार किसी लहर के प्रतिक्षिप्त जल के समान हुआ। आरम्भ में यहाँ इसाई मिशनरियों को यद्यपि अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् यह सब सामान्य होता चला गया और इसाई मिशनरियां अपने कार्य में सफल होती चली गयी। इस स्थिति के लिए मिजो समाज ही जिम्मेदार था।

<u>अध्ययन का उद्देश्य</u> :- इस शोध प्रपत्र के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य निम्नवत है-

1. मिजो जनजातीय समाज में ईसाई धर्म के प्रसार के कारणों की व्याख्या करना इस शोध प्रपत्र का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है।
2. मिजो जनजातियों द्वारा ईसाई धर्म स्वीकार करने के उपरांत उनके समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. मिजो जनजातीय समाज पर ईसाई धर्म के प्रभाव से उनके जीवन शैली एवं आचार विचार में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।

<u>अध्ययन की परिकल्पनाएंः-</u> प्रस्तुत शोध प्रपत्र के अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नवत है-

1. मिजो जनजातियों के परंपरागत समाज की विशेषताएं अब समाप्त हो चुकी हैं वह अपने रीति-रीवाजों से दूर हो चुके हैं।
2. मिजो जनजातीय पर आधुनिक सभ्यता का प्रभाव पूर्ण रूप से दिखाई देता है।
3. मिजो जनजातियां वर्तमान समय में मुख्य धारा से जुड़ी हुई है।

<u>अध्ययन की विधिः-</u> प्रस्तुत शोध प्रपत्र के अध्ययन में अनुभवजन विधि का उपयोग किया गया है इस अध्ययन हेतु अध्ययन क्षेत्र का अवलोकन किया गया है तथा ऐतिहासिक अध्ययन की प्रवृत्ति के माध्यम से परिणाम प्राप्त किया गया है।

मिजोरम में ईसाई मिशनरियों के प्रभाव का विस्तार

मिजोरम के जनजातीय समाज में ईसाइयों ने अपने प्रभाव का विस्तार तीन प्रकार से किया। उन्होंने शिक्षा, धर्म एवं चिकित्सा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया। इसाई धर्म के प्रचारक अपने धर्म का प्रचार गाँव-गाँव किया करते थे। इसाई धर्म के प्रचार हेतु ईसाई उद्यम संघ की स्थापना की गयी। नियमित रूप से इसाई धर्म ग्रन्थ-बाइबिल को पढ़ाने के लिए कक्षाएं चलायी जाती थी, इसमें मिजो जनजातीय समाज के नवयुवक लोग विशेष रूप से भाग लिया करते थे। इसाई धर्म को इन कक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ बताया जाता था तथा इस बात पर विशेष जोर दिया जाता था कि "वह ईसा मशीह को ही अपना ईश्वर माने" इनमें धार्मिक प्रचार की सफलता का मूल्यांकन धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों की संख्या के आधार पर किया जाता था। मिजो जनजातीय समाज को इसाई धर्म में परिवर्तित करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया गया और स्कूल की पाठ्य पुस्तके एवं इसाई धर्म से सम्बन्धित अन्य पुस्तकें भी पढ़ाई जाती थी, शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा थी। योजना यह थी कि स्कूल से शिक्षा ग्रहण कर चुका प्रत्येक विद्यार्थी "दिव्य वार्ता" का सन्देश वाहक बन जाय। इस प्रकार मिजोरम में ईसाई धर्म का प्रसार धीरे-धीरे बढ़ता गया। वर्तमान समय में यहाँ ईसाई धर्म की जड़े इतनी गहरी हो चुकी हैं कि उन्हें हिला पाना भी असम्भव हो गया है। मिजोरम में इसाई धर्म ने अपनी परिधि में अधिकाधिक लोगों को समाहित कर लिया है।

मिजोरम में ईसाई मिशनारियों की सफलता के कारण

मिजोरम में इसाई मिशनरियों की सफलता के कारण ही यहाँ के जनजातीय समाज में ईसाई धर्म धीरे-धीरे लोकप्रिय होता चला गया। इसके पीछे तीन कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रथम तो यह है कि जो लोग ब्रिटिश काल में ईसाई धर्म स्वीकार कर लेते थे उन्हें अंग्रेजों की छत्रछाया एवं विशेष सुविधाएं प्राप्त हो जाया करती थी। दूसरा प्रमुख कारण यह था कि मिजोरम के जनजातीय समाज के मध्य जो लोग ईसाई धर्म का प्रसार कर रहे थे वह अत्यन्त निडर एवं परिश्रमी थे तथा उनके संकल्प को कोई हिला नहीं पाया। तीसरा प्रमुख कारण यह था कि ईसाई मिशनरियों के लोगों ने यहाँ के जनजातीय समाज के साथ पूर्ण रूप से एकात्मकता स्थापित कर ली थी। सारांशतः यहाँ का जनजातीय समाज ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं के प्रति आकृष्ट हो चुका था। यही वह परिस्थितियाँ है कि मिजोरम का जनजातीय समाज ईसाई धर्म के प्रति आज भी अपनी आस्था रखता है।

मिजो जनजातियों पर इसाई धर्म का प्रभावः

मिजोरम पर बहने वाली पश्चिमी समाज की हवा ने बहुत कुछ नष्ट कर डाला है। इसाई धर्म के प्रभाववश यहाँ की सदियों पुरानी प्रथायें ढह चुकी हैं और कितना ही कवित्व नष्ट हो चुका है। पाश्चात्य संस्कृति, जो गतिशील एवं प्रगतिशील भी है उसने यहाँ की पौरुष पूर्ण एवं गतिहीन संस्कृति की जड़ों को हिला कर नष्टप्राय कर कर दिया है। इस सन्दर्भ में हमारा यह अभिप्राय कत्तई नहीं है कि मिजो समाज पर इसाई धर्म का मात्र विध्वंसात्मक प्रभाव ही पड़ा है।

दूसरा पहलू यह है इनके जीवन में एक नया प्रयोजन एवं अर्थ भी प्रविष्ट हुआ है। मिजो जनजातीय समाज के सामने नयी दिशा भी खुली है और आज यह भारत के प्रगतिशील समाज की बराबरी भी कर रहे हैं। यहाँ का जनजातीय समाज सदियों की विछिन्नता को समाप्त कर आगे बढ़ चुका है। वस्तुतः जब भी दो संस्कृति (एक जनजातीय एवं दूसरे आधुनिक) एक दूसरे के सम्पर्क में आती हैं तब इसकी प्रतिक्रिया की सामान्यतः तीन स्थितियां देखने को मिलती हैं- प्रथम स्थिति यह होती है कि आधुनिकता वाली संस्कृति प्राचीन संस्कृति को विछिन्न करने लगती हैं। प्राचीन संस्कृति एवं मान्यताओं वाले लोगों को अपनी ही मान्यताएं एवं संस्कृति निम्न स्तर की तथा बेमेल दिखाई देने लगती है। दूसरी स्थिति में प्राचीन संस्कृति को मानने वाले लोगों के मध्य अनिश्चिता का दौर आरम्भ हो जाता है। वह नवीन एवं प्राचीन के मध्य झूलता हुआ दिखाई देता है। तीसरी स्थिति में समन्वय सन्तुलन स्थापित होने लगता है। इन्ही स्थितियों से गुजरता हुआ मिजोरम का जनजातीय समाज आधुनिकता को अपना चुका है।

मिजोरम में परिवहन एवं संचार सुविधाओं के कारण यहाँ के जनजातीय समाज का एकान्तवास समाप्त हो चुका है। परस्पर विरोधी जनजातीय समाज एक दूसरे के सम्पर्क में आये। यहाँ जनजातियों के कबीलों पर मुखिया का प्रभुत्व समाप्त हो गया, परम्परागत शराब का स्थान आधुनिक शराब ने ले लिया। वस्त्रों व आभूषणों के सम्पर्क में विजातीय संस्कृति ने स्थानीय संस्कृति को परिप्लावित कर दिया है। परम्परागत वस्त्रों एवं आभूषणों का उपयोग अब विशिष्ट अवसरों तक ही सीमित रह गया है। विनिमय के माध्यमों में स्वीकृति मूल्यों व आर्थिक व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया है। यहाँ के लोगों की हैसियत का मूल्यांकन मुद्रा की उपलब्धता पर किया जाता है, परम्पराओं का अब ह्रास हो चुका है। वास्तव में यह सब ईसाई धर्म अंगीकार करने के कारण हुआ है। यहाँ की परम्परागत जनजातीय संस्कृति, वेश-भूषा, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन, श्रेष्ठता द्योतक भोज, एक छत के नीचे शयन, एक साथ का नृत्य आदि की स्थितियां छिन्न-भिन्न हो चुकी हैं। जनजातीय समाज में साहचर्य एवं सजातीयता की भावना लुप्त हो चुकी है। वास्तव में आज यहाँ का जनजातीय समाज व्यक्तिमूलक जीवन शैली को अंगीकार कर चुका है। इसाई धर्म एवं उनकी शिक्षा ने जनजातीय समाज को पूरी तरह से बदल दिया है। यहाँ का युवा वर्ग अब गाँव आने को तैयार नहीं है, पारिवारिक बन्धन समाप्त हो चुका है तथा ईसाई धर्म के प्रभाववश नई व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। इस सन्दर्भ में सन्तोष की बात यह है कि मिजो जनजातीय समाज को निरक्षरतापूर्ण अपने अतीत से आधुनिकता पूर्ण वर्तमान तक पहुँचने में लगभग दो सौ वर्ष लगे होंगे। यहाँ पर यह तथ्य भी विचारणीय है कि मिजो जनजातीय समाज अपने सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आधार को भूल चुका है। प्राचीन और नवीन के मध्य, स्थिरता एवं परिवर्तन के मध्य सन्तुलन स्थापित करना ही होगा अन्यथा वह अपना सम्पूर्ण अस्तित्व ही खो बैठेगें। वर्तमान समय में भी मिजो जनजातीय समाज में अनेक उत्कृष्ट बातें विद्यमान हैं, जिन्हें हमें बचाकर रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

सारांशतः वर्तमान समय में मिजो जनजातीय समाज में ईसाई धर्म अपनी गहरी जड़े जमा चुका है कि इनमें कृत्रिमतापूर्ण जीवन शैली का ही प्रभुत्व देखने को मिलता है। इनके समाज में स्थापित कुल देवता एवं कुल देवी का स्थान ईसा मसीह ने ले

लिया है, गाँव के ढोलक की गूँज अब नहीं सुनाई देती, गिरजाघर के घंटे एवं प्रार्थना ने समस्त जनजातीय समाज के हृदय में अपनी जगह बना ली है। यहाँ के प्राचीन कालीन वीरगाथाओं का स्थान ईसाई भजनों ने ले लिया है। आज मिजो जनजातीय समाज के नवयुवकों एवं वयस्कों में ईसाईयत की सम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक जीवन शैली देखने को मिलती है। एलविन के अनुसार "ईसाई मिशनरियों के धर्म प्रचारकों ने यहाँ की जनजातीय एकता को नष्ट कर दिया है। इनके सामाजिक जीवन के आनन्दों, भोजों, अलंकरणों एवं उनकी रोमांचिकता को उन्हीं के लिए वर्जित कर डाला है। आज मिजो जनजाति में उनकी अपनी ही संस्कृति विद्रूप दिखाई देती है। पाश्चात्य संस्कृति एवं इनकी स्थानीय संस्कृति ने मिलकर एक स्थानिक सभ्यता का रूप ले लिया है। उक्त के सन्दर्भ में हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि पृथक-पृथक जनजातीय समाज में समन्वय स्थापित हो ताकि इनकी मौलिकता बनी रहे और उनकी मौलिक पहचान अक्षुण्ण रह सके।

वस्तुतः मिजो जनजातीय समाज पर ईसाई धर्म के प्रभाव ने उन्हें देश की प्रमुख धारा से अलग कर दिया हैI मिजो जनजातीय समाज का जो धर्म परिवर्तन हुआ है उसे निष्प्रभावी करने के लिए मिजोरम की पूर्ववर्ती लोक कला एवं संस्कृति को स्थापित करना होगाI ऐसा तभी संभव होगा जब हमारी सरकार जनजातीय समाज के मुखिया एवं वहां का प्रशासन संयुक्त रूप से प्रयास करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डी.आर.पी.आर. आसाम-लैण्ड आफ सेवेन सिस्टर्स, यूनाइटेड पब्लिसर्स, गोहाटी, 1980, पृष्ठ 04
2. धर्मयुग पत्रिका-01 फरवरी, 1981, पृष्ठ-20
3. मानव भूगोल प्रोफेसर बी.एन. सिंह एवं मनीष सिंह 2019 प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद पृष्ठ-288
4. यागा एल.बी., द मिजोज, ए स्टडी इनरेसियल पर्सनाल्टी, 2001 पृष्ठ-33
5. उपर्युक्त पृष्ठ-58
6. मिश्रा वेनी प्रसाद-द स्प्रेड आफ क्रिश्चियनिटी इन नार्थ ईस्ट इंडिया, पृष्ठ-91
7. उपर्युक्त, पृष्ठ-97
8. उपर्युक्त, पृष्ठ-98
9. वी.एल.विनः एवारिजनल्स-आक्सफोर्ड पम्पलेट्स आन इंडियन अफेयर्स, मुम्बई, 2020. पृष्ठ-04

10. बी. एस. सिंह ए जियो पोलिटिकल एंड स्ट्रैटेजिकल स्टडी ऑफ़ मिजोरम अप्रकाशित शोध प्रबंध गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर 1986 पृष्ठ संख्या 113
11. उपर्युक्त पृष्ठ संख्या- 210